- प्रथम अध्याय -

"कपड़ा छपाई के आविष्कार और प्रसार का परिचय"

प्रथम अध्याय

"काका हाथरसी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय"

कवि सम्मेलनों में ख्याति प्राप्त, हास्य - व्यंग्य कवि शिरोमणि, हाथरस के हास्य रसज्ञ "काका हाथरसी" एक ऐसा नाम जो हास - परिहास का प्रतीक है और एक ऐसे व्यक्तित्व का पता देता है जो देखने में तो सरल, सौम्य और छोटा-सा है पर जब फुलझड़ी और कारतूस के रूप में फटता है तो उसका असर हँसी के फव्वारों के रूप में फूट पड़ता है। उन्होंने अपनी हास्य की कविताओं से यदि पाठकों के मन को गुदगुदाया है तो अपनी व्यंग्य - कविताओं से समाज और राजनीति को तिल-तिलकर तिलमिलाने के लिए विवश भी किया है।

काकाजी के व्यक्तित्व में संगीत, साहित्य, चित्रकला इन तीनों ललित कलाओं का त्रिवेणी संगम है। साथ ही काकाजी अभिनय कला में भी पारंगत है। दुबला-पतला शरीर, लंबा कद, गौर वर्ण, गले में मफलर, हाथ में छड़ी, लम्बी दाढ़ी, धोती और रेशम का कुर्ता, मौसम के अनुकूल बंद गले का कोट और एक टिपीकल आवाज के धनी काकाजी के सिर्फ दर्शनमात्र से ही होठोंपर हँसी उभरती है।

एक कवि, एक कलाकार होते हुए भी प्रभुलाल गर्ग उर्फ काका हाथरसी सबसे पहले एक इन्सान के रूप में सामने आते है। मानवीय गुणों से विभूषित काकाजी निश्छल, सहृदय एवं संवेदनशील व्यक्ति है। उनके साहित्य में उनका व्यक्तित्व कहा तक झलकता है, यह देखने के लिए हमें उनके व्यक्तित्व को सबसे पहले परखना होगा।

१. व्यक्तित्व :

जन्म एवं बचपन -

प्रभुलाल गर्ग उर्फ काका हाथरसी का जन्म १८ सितम्बर, १९०६ को हाथरस में हो गया। उनके प्रपितामह गोकुल महावन से आकर यहाँ बस गये थे। उन्होंने बर्तन का व्यापार किया। पितामह श्री सीताराम भी यही करते रहे। सम्पत्ति के बँटवारे के कारण काका के पिता श्री शिवलाल के पास कुछ भी न शेष रहा और उन्होंने "धूमीमल कसेरे फर्म" (बर्तनों की दुकान) में मुनीमगिरी करना शुरू किया। उनकी माता का नाम बर्फीदेवी था। १९०६ में प्लेग के भयंकर प्रकोप में उनके पिताजी उन्हें १५ दिन के शिशु के रूप में छोड़कर चल बसे। काकाजी के परिवार में उस समय उनकी माताजी, बड़े भाई भजनलाल, और बड़ी बहन किरनदेवी थीं। इन चारों की गुजर-बसर बड़ी मुश्किल से होती थी। उनके इगलास निवासी मामाजी अपनी बहन के परिवार के गुजारे के लिये माहवार ८ रुपये भेज देते थे। जमाना सस्ते का था फिर भी उसमें उनका खर्चा जैसे-तैसे चल जाता था। उनकी माताजी पूरे परिवार को आस-पास के रिश्तेदारों के यहाँ ले जाती थी और काम चला देती थी। कुछ दिन जब वे मथुरा में अपने मौसाजी के पास थे तब उन्हें चाट - पकौड़ी भी बेचनी पड़ी। इस तरह कभी बिसावर कभी मुरसान और कभी बेसवाँ में रहते हुए जीवन का पहिया आगे बढ़ता रहा।

सन १९१८ में जब प्रभुलाल गर्ग उर्फ काकाजी के मामा श्री रोशनलाल दाऊजी के दर्शन करने "बलदेव" आये थे तब वे अपने साथ काकाजी को भी इगलास ले गये। वहीं उनकी शिक्षा आरंभ हो गयी। लेकिन अपनी विपन्नावस्था के कारण मामाजी उन्हें चौथी कक्षा से आगे न पढ़ा सके। उसके बाद वे मामा की मिठाई की दुकान में ग्राहकों को पटाने

के लिए बैठने लगे। वहीं उन्होंने कई बार मिठाई की चोरी भी की। एक बार पकड़े जाने की आशंका थी लेकिन बच गये और तब से माँगकर खाने लगे।

आर्थिक विपन्नता, संघर्ष और अभाव के साथ पलते, बड़े होते काकाजी बाद में मानो उन्हीं परिस्थितियों पर एक कवि के रूप में अट्टाहास कर उठें।

शिक्षा -

सन १९१६ में जब काकाजी की आयु १० वर्ष की थी, उनके मामाजी उन्हें "बलदेव" से "इगलास" ले आये और वहीं से उनकी प्राइमरी शिक्षा आरंभ हुई। स्कूल में वे हमेशा कुछ-न-कुछ शरारतें करते रहते थे। एक बार उन्होंने चूरन के लिए पाठशाला के हाजिरी रजिस्टर के कुछ पन्ने फाड़कर बेच डाले और जब यह बात खुल गई तो उन्हें मुर्गा बनाया गया। पढ़ने में वे तेज थे। उन्होंने द्वितीय और तृतीय कक्षा की परीक्षा एक साथ दे दी और चौथी कक्षा में आ गये। चौथी कक्षा में पास होने के बाद अर्थाभाव के कारण आगे पढ़ नहीं सके और मामाजी के काम में हाथ बटाने लगे।

उसके बाद उन्होंने कई अध्यापकों के यहाँ एक-एक, दो घंटे पढ़ाई की। अंग्रेजी पढ़ानेवाले गोल - मटोल वकीलसाहब बाबू लक्ष्मीचंदजी पर उन्होंने पहली बार व्यंग्य कविता लिखी जो अधूरी ही थी, तभी वे पकड़े गये।

उसके बाद तो वे जो कुछ भी पढ़ सके वह या तो ट्यूशन के जरिए या फिर किताबी ज्ञान ! स्कूली शिक्षा छूट जाने के बाद उन्होंने छह रुपये मासिक वेतनपर नौकरी करनी शुरू की। वे लिखते है -

"गरीबी के कारण कॉलिज के नॉलिज से वंचित रहे।" [१]

स्कूली शिक्षा के बिना मनुष्य प्रगति नहीं कर सकता इस सिध्दांत को काकाजी ने झूठा साबित कर दिया है। उन्होंने अपने अनुभवों के बलबूते पर जो ज्ञान पाया है वह उन्हें किसी तरह से भी कम शिक्षित घोषित नहीं करता। अनुभव से अर्जित ज्ञान ही तो उनकी सफलता का राज है।

नाट्य – अभिनय –

काकाजी के छोटे मामा मन्नीलाल वसंत पंचमी के मेले में नाटक करवाते थे। वे इधर – उधर से चन्दा इकठ्ठा करते और कुछ अपनी जेब को तकलीफ देते लेकिन नाटक 'बिना टिकट' मुफ्त ही दिखाते थे। एक बार इगलास में "श्रीमती मंजरी" नाटक खेला गया जिसमें काकाजी को राजस्थानी वेशभूषावाले (सिर पर पगड़ी, अंगपर अंगरखा, हाथ में चाँदी की मूठवाली छड़ी, एक आँख के काने), कोर्ट में झूठी गवाही देनेवाले नैनाजी की भूमिका निभानी थी। वहीं से उनके नाट्याभिनय की शुरुवात हुई। काकाजी मेकअप के इंतजार में बैठे थे। लेकिन मेकअप करनेवाला लड़का उनसे ईर्ष्या करता था क्योंकि वह खुद नैनाजी का रोल करना चाहता था। इसलिये वह अन्य अभिनेताओं के मेकअप् करता रहा। काकाजी ने कोयला लेकर घिसा और अपने चेहरेपर लगा लिया। और मामाजी जब ढूँढने आये तो उन्होंने वह सब उस मेकअपवाले लड़के ने किया है, यह बताया। उस लडके को डाँट पड़ी। काकाजी ने लिखा है – "इस घटना के कारण उस दिन ड्रामा एक घंटे लेट हो गया, लेकिन उस लड़के को पिटवाने से हमारी आत्मा को जो सुख मिला, उसका वर्णन करना कठिन है।" [२]

१. काका हाथरसी – "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ २२)।
२. – वही – (पृष्ठ २०)।

उनके इस अभिनय की तहसीलदार साहब ने भी प्रशंसा की थी। इसके बाद उन्होंने कई नाटकों में अभिनय किया और सफल भी रहे।

आरम्भिक तुकबन्दी -

बचपन में काकाजी ने अपने गुरुजी पर जो कविता की थी वह तो अधूरी ही रह गई थी लेकिन बाद में जब उनकी कुछ कविताएँ लोगों को पसंद आने लगी तब वे बारातों में अपनी भडास को पूरी करने लगे। एक बार जब काकाजी हाथरस के निकट दधैंटा नामक गाँव में बाराती बनकर गये तो उन्होंने उस गाँव में बहुत पिटीयाँ पायी और उसी पर उन्होंने यह कविता सुनानी शुरू की -

"हाय रे दधैंटा तोमें भरे निरे पैंटा
मर्द सुअर के से घेंटा, करकैंटा-सी लुगाई है।" [१]

लेकिन अगली पंक्ति सुनाने से पहले ही किसी ने कच्ची मिट्टी का एक ढेला उनके सिरपर दे मारा। एक और बारात में तो उनकी कविता की वजह से झगड़े वल की नौबत आ गयी थी। उन्होंने "कचौडी भजी कच्ची" की तुक मिलाने के लिए "चन्दो चच्ची" शब्दों का इस्तमाल किया था और दुर्भाग्य से वहाँ की महिलाओं में एक चन्दादेवी थी। इस प्रकार काकाजी की आरंभिक रचनाओं का प्रस्तुतीकरण रहा लेकिन इसकी वजह से हमें इस बात की जानकारी भी मिलती है कि, उस समय बारातों में जाना एक शान की बात समझी जाती थी। बारातें चार-पाँच दिनों तक चलती थी। उस समय बारातों में वेश्यायें भी जाती थी।

---

१. काका हाथरसी - "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ ३३)।

अर्थाभाव और नौकरी --

ऐसा कहा जाता है कि, गरीबी किसी को निठ्ल्ला बैठने नहीं देती। काकाजी की शिक्षा तो बचपन में ही छूट गयी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारी को निभाते हुए उन्होंने कम उम्र में ही सालिगराम बद्रीप्रसाद (चन्दौसीवाले) के फर्म में अनाजों के बोरों की तक-पट्टी (वजन) लिखने का काम किया। उनकी उस वक्त की तनख्वाह थी ८ रुपये माहवार। वहींपर उन्होंने तीन साल नौकरी की। तब तक उनका वेतन ८ रुपये से १२ रुपये माहवार तक पहुँच गया। बाद में उन्हें १५ रुपये माहवार पर रामलाल बद्रीदास सर्राफ के यहाँ नौकरी मिल गयी जो उनके नाट्याभिनय की रुचि की वजह से छूट गयी। वह भी छोड़ देने पर जानकीप्रसाद राधेप्रसाद की फर्म में २५ रुपये माहवार की नौकरी की। वह उनके जीवन की आखरी नौकरी थी।

चित्रकारी -

जब काकाजी सेठ राधेप्रसाद पोद्दार के यहाँ काम करते थे, श्रावण महिने में हिंडोलों के उत्सव में अपनी चित्रकला का प्रदर्शन करते थे। उन्हें यह शौक सन १९२४-२५ के आस-पास उनके एक दोस्त रंगीलाल जैन के सहवास में लगा। तब से आजतक काकाजी ने १५० चित्र बनाये हैं जो संगीत कार्यालय, हाथरस में लगे हुए हैं। पहले तो उन्होंने धार्मिक चित्र बनाये फिर उन्होंने बडे-बडे संगीतकारों के चित्र बनाये जिनको प्राप्त करने के लिए उन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उनकी प्रदर्शनियों के चित्रों को पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

पारिवारिक जीवन -

सेठ राधेप्रसाद के यहाँ काम करते वक्त ही काकाजी के लिए लड़कीवाले चक्कर काटने लगे लेकिन उनकी २५ रुपये तनख्वाह सुनकर लड़कीवाले

वापस चले जाते थे। काकाजी कहते हैं - "आखिर एक बेटीवाला फँस ही गया।" [1] हाथरस के निकट सादाबाद से थोडी दूर एक ग्राम है - नौगाँव। वहाँ की लड़की 'रतना' के साथ १९२५ की वसंत पंचमी को काकाजी का विवाह हो गया। अपनी शादी के सम्बन्ध में मनोरंजक जानकारी काकाजी ने अपने "काका-काकी के लव-लैटर्स" में दी है। सन १९२८ के बाद उनकी पत्नी ने दो पुत्रियों को जनम दिया। उसके दो वर्ष बाद एक पुत्र को जनम दिया। लेकिन विधि की विडम्बना कि, इन तीनों को भी भगवान ने छीन लिया। उनके बड़े भाई भजनलाल को २९ अक्तूबर, १९३२ को पुत्र प्राप्ति हुई जिसका नाम लक्ष्मीनारायण रखा गया और काकाजी ने उसे गोद ले लिया। बचपन से ही उस पर संगीत के संस्कार किये गये और आज डा॰ लक्ष्मीनारायण गर्ग - "काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट" मे मैनेजिंग ट्रस्टी, "संगीत" मासिक पत्र के प्रधान संपादक और "संगीत कार्यालय" के संचालक हैं। उनकी पत्नी रीता गर्ग "संगीत" प्रेस की संचालिका है। उनके दोनों भतीजों और तीनों भतीजियों से सम्बन्धित व्यक्ति साहित्य के क्षेत्र में मान्यता प्राप्त व्यक्ति हैं जैसे - डा॰ मीना अग्रवाल जी उनकी दूसरी भतीजी है, उनके पति डा॰ गिरिराजशरण अग्रवाल जी शताधिक पुस्तकों के लेखक, संपादक एवं "काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट" के सम्मानित ट्रस्टी है। उनकी तीसरी भतीजी बागेश्री चक्रधर जी के पति डा॰ अशोक चक्रधर जी हास्य - व्यंग्य कवियों में मान्यता प्राप्त कवि है। उनका पौत्र अशोक गर्ग "काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट" का सचिव और "संगीत" मासिक पत्र का प्रबन्ध सम्पादक है।

संतान के लिए लालायित काकाजी की संतान की कमी को लक्ष्मीनारायण जी और भतीजों - भतीजियों ने पूरा कर दिया हैं। उनका पारिवारिक जीवन अत्यंत सुखमय है।

१॰ काका हाथरसी - "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ २७)।

बिमारी और ऑपरेशन -

सुख के बाद दु:ख ये तो जीवन का चक्र है। जनवरी, १९६३ में काकाजी का प्रोस्टेट ग्लाईड का ऑपरेशन आगरा के सरोजनी नायडू हॉस्पिटल में हो गया। उसके बाद सन १९६७ के आस-पास काकाजी की एक आँख का ग्लोकामा (कालापानी) का ऑपरेशन हो गया। उसके पहले सन १९६७ के आस-पास ही उनका पौरुष ग्रंथि का ऑपरेशन हो चुका था लेकिन १९९२ तक उन्हें यह तकलीफ़ सताती थी। सन १९९२ में बिजनौर में डा॰ नीरज गुप्ता के नर्सिंग होम में ऑपरेशन किया गया और अब वे स्थायी रूप से बिजनौर में अपना जीवन व्यतीत कर रहे है।

प्रभुलाल बने "काकाजी" -

अग्रसेन जयंती के अवसरपर "नवयुवक अग्रवाल मण्डल" की ओर से हाथरस में ड्रामा तथा कवि सम्मेलन हुआ करते थे। उन्हीं दिनों काकाजी ने "आज की दुनिया" और "समाज के आँसू" इन दो छोटे नाटकों में काम किया। एक और नाटक में काकाजी को एक ऐसे काका चौधरी की भूमिका मिली जो समाज - सुधार के लिए चंदा माँगने के लिए आये युवकों को चौधरी समाज पर व्यंग्य बाण कसकर भगा देते हैं। नाटक अत्यंत सफल रहा। दूसरे दिन जब घर से बाहर निकले तो उन्हें देखकर लोग कहने लगे - "देखो, वो जा रहा है काका।" [१] उसके बाद सभी उन्हें "काकाजी" कहने लगे। फिर कुछ मित्रों की सलाह से उन्होंने आगे "हाथरसी" जोड़ दिया।

संगीत कार्यालय की स्थापना एवं उसके प्रकाशन -

सेठ राधेप्रसाद ने आर्थिक संकट के कारण अपने मुनिम-गुमाश्तों की छंटनी शुरू की तो उसकी चपेट में काकाजी भी आ गये और उसके बाद

---

१. काका हाथरसी - "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ ३०)।

काकाजी ने कभी-भी नौकरी नहीं की। कुछ दिनोंतक काकाजी ने आर्ट स्टूडिओ खोलकर चित्रकारी की। साथ ही हारमोनियम और बांसुरी बजाने का काम भी करते रहे। चित्रकारी के द्वारा काकाजी कई दिनोंतक अपने परिवार को पालते रहे लेकिन काकाजी का उदारता का फायदा लोग उधार लेकर उठाने लगे तो यह काम उन्होंने बंद कर दिया। लेकिन आर्थिक तंगी का मुकाबला कैसे करते ? उन्होंने अपने मित्र श्री नंदलाल शर्मा (तबलावादक) की सहाय्यता से "हारमोनियम, तबला, बांसुरी मास्टर" (म्यूजिक मास्टर) यह पुस्तक अपनी सारी जमापूँजी (८० रुपये) लगाकर प्रकाशित की। इस पुस्तक का पहला संस्करण हाथों - हाथ बेचा गया। उनके मित्र ने इसी समय कुछ किताबें आधे दाम बेचकर उन पैसों को उड़ा दिया तो काकाजी ने इसके सर्वाधिकार अपने हाथ में ले लिये और दूसरे संस्करण में प्रकाशक का नाम "गर्ग एण्ड कंपनी" छपने लगा और उसके बाद "संगीत कार्यालय" के नाम से छपने लगा।

इसके बाद उन्होंने सन १९३५ से "संगीत" मासिक पत्र का आरंभ कर दिया। आज संगीत कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी पुस्तकों की एक-एक प्रति लेकर एक सेट तैयार कर दिया जाय तो उसकी कीमत ८,००० रुपये के करीब होगी।

आदतें और दिनचर्या -

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व की सही जानकारी के लिए उसकी आदतों से परिचित होना बहुत जरूरी है क्योंकि कई बार उनसे ही हम उसके व्यक्तित्व के उन गुणों को जान लेते हैं जो साफ दृष्टिगोचर नहीं होते।

काकाजी की एक आदत सुबह-शयाम टहलने की है। उनकी इस आदत की वजह से कई बार उनकी गाड़ियाँ छूट गयी हैं और उन्हें रेलस्थानक पर रुक जाना पड़ा है। उन्होंने ऐसे कई संस्मरण अपनी आत्मकथा में दिये हैं। उनमें से एक इस प्रकार -

"एक बार मैं और गोपालदास नीरज कलकत्ता से कालका मेल के प्रथम श्रेणी के कूपे में हाथरस लौट रहे थे। मुझे प्रात: - सायं घूमने की आदत है ही। मैं इलाहाबाद स्टेशन पर उतरकर घूमने निकल गया, नीरज जी से यह कहकर कि, मैं अभी आता हूँ। क्योंकि पूछने पर मालूम हो गया था कि, गाड़ी अभी २० मिनट खड़ी रहेगी। गाड़ी २० मिनट की जगह १५ मिनट में ही चली गई। मैं घूमकर आया तो प्लेटफार्मपर गाड़ी को न देखकर हक्का-बक्का रह गया। मेरा सब सामान नीरज के साथ था। मैं स्टेशन मास्टर के पास गया और अपनी करुण कहानी सुनाई। वहाँ के स्टेशन मास्टर ने टूँडला को फोन करा दिया कि, कालका मेल के प्रथम श्रेणी के कूपे में गोपालदास नीरज जा रहे हैं। उनसे काका हाथरसी का सामान लेकर रख दिया जाय। अगली ट्रेन से काका टूँडला पहुँचकर अपना सामान प्राप्त करा लेंगे। फिर मुझे मालुम हुआ कि, नीरज भी टूँडलापर मेरे सामान-सहित उतर गये हैं। मैं जब दूसरी ट्रेन से टूँडला पहुँचा तो नीरज कहने लगे - काका मैं तो घबरा गया था। भगवान का भजन करने लगा कि, कोई लांछन न लगे। कोई कह सकता था कि, तुमने काका को गाड़ी से फेंक दिया है और सामान लेकर भाग रहे हो। मुझे स्टेशन पर उतारकर पुलिसवाले बंद कर सकते थे। अच्छा हुआ काका, तुम सकुशल आ गये। सँभालो अपना सामान, मैं तो अलीगढ़ जा रहा हूँ। "[१]

यह एक संस्मरण है, ऐसी कई घटनाएँ उनके जीवन में घटित हो चुकी हैं। काकाजी हर रोज सुबह जल्दी उठते हैं। सुबह-श्याम कसरत करते हैं और भूने हुए चनों का नाश्ते में इस्तमाल करते हैं। उनका कहना है - "इनमें ब्लॉटींग शक्ति होती है, ये पेट के ऐसे जल को सोख लेते हैं जो जुकाम पैदा करता है। जब से मैंने चनों का सेवन शुरू किया है, जुकाम कभी होता भी है तो बहुत जल्द भाग जाता है।"[२] काकाजी आज ८९ वर्ष के है फिर भी उनकी सेहत अच्छी है, इसकी यही वजह हो सकती है। लेकिन साथ

---

१. काका हाथरसी - "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ १७६-१७७)।

२. - वही - (पृष्ठ ११२)।

ही उन्होंने यह भी कहा है कि, वे घर की छोटी-छोटी बातों पर कभी टीका-टिप्पणी नहीं करते बल्कि उनकी हर गलती उन्हें नई कविता की प्रेरणा देती है। साथ ही उन्हें सफर करने का बेहद शौक है। उन्होंने अपने जीवन में इतनी यात्राएँ की है कि, एक किताब उन्हीं के वर्णन से बन जाएगी।

उनके व्यक्तित्व की अलग पहचान करानेवाली उनकी दाढ़ी सन १९५६ के आस-पास से उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन गयी। उन्होंने अपनी कविताओं में भी दाढ़ी के महत्व का गुणगान किया है। एक कविता में काकाजी ने लिखा है -

"'काका' दाढ़ी राखिए, बिन दाढ़ी मुख सून,
ज्यों मसूरी के बिना, व्यर्थ देहरादून।"

इस प्रकार काकाजी की कुछ आदतें उन्हें परेशानी में डाल देती हैं, कुछ आराम पहूँचाती है। उनकी सुनिश्चित दिनचर्या ही मानो उनकी अच्छी सेहत और लम्बी आयु का राज है।

घुमक्कड़ी -

सुबह-श्याम घूमने की आदत होनेवाले काकाजी ने जीवन में यात्राएँ न की हो, यह कैसे संभव है ? काकाजी ने अपनी आयुभर में कई यात्राएँ की हैं और उनके द्वारा प्राप्त अनुभव उनकी कविताओं में भी झलकते हैं। उन्होंने जो यात्राएँ की हैं उन्हें हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं - पहाड़ी यात्राएँ, तीर्थयात्राएँ और विदेश यात्राएँ।

अ) पहाड़ी यात्राएँ -

काकाजी पहाड़ की सैर करनेवाले सैलानी नहीं थे। लेकिन एक बार उन्हें मसूरी में कवि-सम्मेलन के लिए बुलाया गया और काकाजी को वहाँ

का शान्त वातावरण, प्रकृति का मनोरम सम इतना अच्छा लगा कि, काकाजी ने उसके बाद कई बार और कई तरह की पहाड़ी यात्राएँ की। अक्सर काकाजी गर्मियों में मसूरी में श्री सिंघानिया के 'कमला कैसलस' में निवास कर कविताएँ करते हैं। उसके पहले वे वहीं के श्री गूजरमल मोदी जी के 'मोदीभवन' पर ठहरते थे।

'कमला कैसलस' में अपने निवास के बारे में काकाजी ने लिखा है - "१९७६ से अबतक प्रतिवर्ष दो-ढ़ाई महिने हाथरस की भयंकरी गर्मियों को छोड़कर "कमला कैसलस" के गेस्ट हाउस में अपनी काव्य बैटरी चार्ज करते रहते हैं। वहाँपर एक पुस्तक तैयार हो जाती है, जिससे मसूरी का खर्चा भी निकल आता है।" [१]

उन्होंने अन्य कई पहाड़ी यात्राएँ की है जैसे - १० बार नैनीताल, ४ बार शिमला, १ बार श्रीनगर, १ बार रानीखेत, १ बार दार्जिलिंग, २ बार माउण्ट आबू, १ बार कश्मीर और २०-२२ बार मसूरी। रानीखेत के निकट कौशानी में और नैनीताल में काकाजी पंतजी से मिले। नैनीताल में एक बार वे शिवानी जी से भी मिले लेकिन उस वक्त शिवानी जी कहानी के क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त न थी।

आ) <u>तीर्थयात्राएँ</u> -

काकाजी ने सिर्फ पहाड़ों की यात्राएँ ही नहीं की है बल्कि उन्होंने कई तीर्थस्थानों की भी यात्राएँ की हैं। लेकिन उनकी तीर्थयात्राओं की शुरुवात मद्रास के एक कविसम्मेलन से हुई। सन १९७५ में मद्रास में जब "काका हाथरसी नाईट" की गयी उसके बाद किसी सेठ के यहाँ कविगोष्ठी हुई। उनसे काकाजी ने पारिश्रमिक के बदले तिरुपती बालाजी के दर्शन करवाने की प्रार्थना की। उन्होंने तात्काल व्यवस्था कर दी और उसी वर्ष उन्होंने पहली विदेश यात्रा की

---

१. काका हाथरसी - "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ ७५)।

लेकिन १९७६ में जो "आल इंडिया रेल पास" काकाजी को प्रदान किया गया उसके जरिए काकाजी ने रामेश्वरम्, बद्रीनाथ, केदारनाथ, जगन्नाथपुरी, द्वारका, अमरनाथ, हरिद्वार आदि कई तीर्थस्थलों की यात्राएँ की। बचपन में काकाजी ने कर्णवास की यात्रा भी की थी।

इ) विदेश यात्राएँ -

काकाजी की विदेश में लोकप्रियता का यह एक समुज्ज्वल प्रमाण है कि, सन १९७४-७५ से अबतक काकाजी ने चार बार विदेशों की यात्राएँ की है और वहाँपर भी अपनी कविताएँ श्रोताओं के सम्मुख पेश कर वाहवाही लूटी है। "सन १९७४ में बैंकाक (थाईलैंड) और सिंगापुर के निवासियों ने उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित किया और मार्च - अप्रैल के २२ दिनों में काका ने अपनी हास्य - रचनाओं से वहाँ के निवासियों को गद्‌गद् कर दिया।" [१]

प्रथम यात्रा - सन १९७५ में काकाजी ने थाईलैंड, बैंकाक, सिंगापुर में कई काव्यगोष्ठियों में अपनी कविताएँ श्रोताओं के सम्मुख पेश की। वहाँ के श्रोता इनकी कविताओं से अत्यंत प्रभावित हुए।

द्वितीय यात्रा - सन १९८४ में काकाजी ने अमरीका, कनाडा की यात्रा की। वहाँपर कुल-मिलाकर ४० काव्यगोष्ठिया हुई। वहाँपर काकाजी ने छह महिनों के लिए सिटीझन शीप ले ली थी लेकिन इंदिराजी के निधन की सूचना पाकर काकाजी वापस लौट आये।

तृतीय यात्रा - सन १९८६ में काकाजी की तीसरी विदेश यात्रा थाईलैंड, अमरीका, कनाडा तथा इंग्लैंड में हुई। इस बार वहाँ दूरदर्शन और रेडिओपर भी उनके कार्यक्रमों का प्रसारण हुआ।

१. डा॰गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" (प्रस्तावना में) (पृष्ठ २३)।

चतुर्थ यात्रा - सन १९८९ में काकाजी ने जो चौथी विदेश यात्रा की उसमें सबसे पहले एक महिना वे लंदन मे रहे। इसके बाद अमरीका और कनाडा की यात्रा की। यह यात्रा अत्यंत सफल रही।

इन सभी यात्राओं में काकाजी की विदेश स्थित भारतीयों ने कई तरह से मदद की। कविसम्मेलनों के सिलसिले में काकाजी ने दो बार 'आसाम' की यात्रा भी की है। गोहाटी, तिनसुखिया, तेजपुर, डिब्रुगढ़ आदि कई जगहोंपर उन्होंने अपने कार्यक्रम पेश किये।

इस प्रकार भारतीय जनमानसपर छाये हुए काकाजी की रचनाओं का प्रभाव विदेशों में भी देखने को मिलता है।

पुरस्कार ट्रस्ट की स्थापना -

सन १९७५ में काकाजी ने बालकवि बैरागी के - "काका आप ने हास्य-रस के द्वारा यथेष्ठ अर्थ और यश अर्जित किया है। कोई ऐसा काम कर जाओं जिसके द्वारा आप का नाम युगों-युगों तक अमर रहें।" [१] - इन शब्दों से प्रभावित होकर हास्य-रस के एक कवि को प्रतिवर्ष पुरस्कार मिलता रहें यह सोचकर "काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट" की स्थापना की। उस वक्त ११०० रुपयेवाला यह पुरस्कार आज ३१००० तक पहुँच गया है। इसके अंतर्गत अबतक ओमप्रकाश आदित्य (१९७५), विश्वनाथ विमलेश (१९७६), शैल चतुर्वेदी (१९७७), माणिक वर्मा (१९७८), सुरेन्द्र शर्मा (१९७९), शरद जोशी (१९८०), हुल्लड मुरादाबादी (१९८१), सुरेश उपाध्याय (१९८२), अशोक चक्रधर (१९८३), सूँण्ड फैजाबादी (१९८४), के.पी.सक्सेना (१९८५), अल्हड बीकानेरी (१९८६), गोविंद व्यास (१९८७), बंकट बिहारी 'पागल' (१९८८), सत्यदेव शास्त्री 'भोंपू' (१९८९),, प्रदीप चौबे (१९९०),

---

१. काका हाथरसी - "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ ८४)।

डा॰ सरोजनी प्रीतम (१९९१), मधुप पांडेय (१९९२), आदि को यह पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

"काका ब्रजक्षेत्र के निवासी हैं। अतः ब्रजभाषा से आप को अपार स्नेह है। ब्रजभाषा की उन्नति और विकास के लिए उन्होंने प्रत्येक वर्ष ५,००० रुपये का पुरस्कार ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि को देने का निश्चय किया। ट्रस्ट द्वारा अबतक सर्वश्री श्यामाचरण श्याम, सुरेश चतुर्वेदी, आत्मप्रकाश शुक्ल, डा॰ वीरेंद्र तरुण और सोम ठाकुर को यह पुरस्कार दिया जा चुका है।" [१]

प्राप्त सम्मान -

एक साहित्यिक यद्यपि रचनाओं का निर्माण अपनी खुशी के लिए करता है फिर भी यदि उसकी रचनाओं का सही मूल्यांकन कर उसे उचित सम्मान से पुरस्कृत किया जाय तो उसे और अधिक खुशी होती है। काकाजी को भी उनकी साहित्य-सेवा के लिए कई सम्मानों से पुरस्कृत किया गया हैं। जैसे -

सन १९६७ में काकाजी के "तुक्तम् शरणम् गच्छामि" का विमोचन हुआ उस वक्त कलकत्ता में उनका सम्मान किया गया।

सन १९७८ में अग्रवाल समाज, चंडीगढ द्वारा "अग्रश्री" की उपाधि प्रदान की गयी। इसी वर्ष उन्हें "ठिठोली पुरस्कार" भी प्राप्त हुआ। इस वर्ष में ही "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ" का प्रकाशन भी हो गया और इसी वर्ष कविसम्मेलनों में आने-जाने की सुविधा हेतु तात्कालीन रेलमंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी ने प्रथम श्रेणी का "आल इंडिया रेल पास" काकाजी को देकर उन्हें सम्मानित किया।

---

१. डा॰ मिथिलेश माहेश्वरी - "काका हाथरसी : एक समीक्षा यात्रा" (पृष्ठ १६)।

सन १९७९ में उन्हें उपराष्ट्रपतिद्वारा "कलारत्न" की उपाधि प्रदान की गयी।

सन १९८० में हाथरस में उन्हें "भारत शंख" की उपाधि प्रदान की गयी।

सन १९८४ में बालटीमोर (वाशिंग्टन) के मेयर द्वारा आनरेरी सिटीजनशीप दी गयी।

१६ मार्च, सन १९८५ को उस समय के राष्ट्रपति ~~ज्ञानी झैलसिंगजी~~ ने काकाजी को "पद्मश्री" से सम्मानित किया। इस समय दिल्ली नगर निगम के तत्कालीन अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल जी ने १७ मार्च,१९८५ को "अभिनंदन समारोह" आयोजित किया था। साहित्य के क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता का उदाहरण इस सम्मान से बढ़कर क्या हो सकता है ?

प्रेरणादायी आदर्श व्यक्ति -

"जब कभी मुझसे पूछा जाता है कि, आप के आदर्श व्यक्ति कौन-से हैं ? तो मैं उन व्यक्तियों के नाम बता देता हूँ जिनकी कला से मैं प्रभावित हुआ हूँ या उनके सहयोग से मैंने प्रगति की है।" [१] - यह कहनेवाले काकाजी के आदर्श हैं - पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, प्रसिध्द नर्तक उदयशंकर, आचार्य बृहस्पति, श्रीमती इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, श्री गोपालप्रसाद व्यास और "धर्मयुग" के पूर्व संपादक डा. धर्मवीर भारती।

काकाजी की रचनाओं का प्रभाव कितना है यह अगर हमें देखना हो तो हमें ओशो अर्थात आचार्य रजनीशजी के प्रवचनों को सुनना पड़ेगा, क्योंकि उन्होंने काकाजी की कई रचनाएँ अपने प्रवचनों में सुनाई है। इसके

१. काका हाथरसी - "मेरा जीवन ए-वन" (पृष्ठ १८३)।

साथ ही १७ नवम्बर, १९७४ को मध्यप्रदेश में काकाजी जिस रेल से जा रहे थे, उस रेल को छात्रों ने रोक लिया और जब १९ सितम्बर को काकाजी ने आने का वादा किया तभी रेल को जाने दिया। यह भी उनकी लोकप्रियता की एक मिसाल है।

अंतरंग दर्शन -

अबाहय दोनों रूपों में काका का व्यक्तित्व हास्य से सराबोर है। उनके बारे में अगर किसी ने पहले सुन लिया हो कि, वे किसी और कवि को मंच पर जमने ही नहीं देते तो उसके मन में काकाजी की एक ऐसी प्रतिमा बन जाती है जो उन्हें देखने के पश्चात् गलत साबित होती है। उनके बाहय व्यक्तित्व का अंदाजा ही जब गलत साबित होता है तो उनके अंतरंग के बारे में क्या कहे ?

उनकी कविताओं को सुनने के बाद पहले तो हर कोई यही सोचता है कि, वे हँसमुख व्यक्ति होंगे। श्री बाबूसिंह चौहान लिखते हैं - "जब वे मंचपर 'माइक' के सामने आये तो मेरी कल्पनाओं का रेखाचित्र एकदम टूट गया। उनकी दाढ़ी, कुर्ता और पायजामा देख और माइक के सामने उनकी सौम्य मूर्ति जिसपर हास्य का कोई भी चिन्ह न था, देख मैं चकित रह गया। क्या यह अत्यंत गंभीर, संन्यासी-सा व्यक्ति हजारों श्रोताओं के मन को सहज ही गुदगुदा सकता है ? एक प्रश्न मन में उठा और ज्योंही उनका कविता-पाठ आरम्भ हुआ, मानो श्रोताओं का धैर्य का बाँध टूट गया और वे सब हास्य एवं आनंद के सागर में गोता लगाने लगे।" [१]

उनकी इस लोकप्रियता को देख कभी-कभी अन्य कवियों को ईर्ष्या भी होती थी। श्री हरप्रसाद शास्त्री जी ने लिखा है -

१. संपादक डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ" (पृष्ठ ७४)।

"उनका कवि व्यक्तित्व प्रभावशाली एवं छा जानेवाला है। मंचपर उनके आते ही चारों ओर से हर्षध्वनि होने लगती है। प्रतीत होता है कि, कोई नेता या मंत्री मंच पर आ रहा है। 'काका' 'काका' की पुकार से सभामंडल गूँजने लगता है। उनके इस प्रभावकारी व्यक्तित्व से ईर्ष्या वश या आतंकित होकर एक बार एक कवि मित्र ने कहा था - भाई, तुम्हें एक नेक सलाह देता हूँ। अपने आयोजनों में काका को न बुलाया करो। वह मंच पर किसी दूसरे को जमने ही नहीं देता।" [१]

हास्य-व्यंग्य पूर्ण कविताएँ लिखनेवाले कवियों को साहित्यिक दृष्टि से कम आँका जाता है। लेकिन एक हास्यकवि होकर भी काकाजी की अलग पहचान कराते हुए श्री ब्रजेश 'चंचल' लिखते है - "लोगों की आम धारणा हास्य-कवि को साहित्यिक विदूषक मानने की बन जाती है। मगर काका हाथरसी हास्यकवि होकर भी जीवन के प्रति अत्यधिक नियमित और गंभीर है। चाहे पूरी रात सम्मेलन चले या प्रातःकाल दो घण्टे रात शेष तक, काका के भीतर आलस्य जैसी कोई चीज नहीं फटकती।" [२]

एक मराठीभाषी कवि श्री कमलकांत 'कमल' जी ने लिखा है - "काका से मेरा परिचय पिछले दस वर्षों का है। मुझ मराठी-भाषी को हिन्दी कविता की ओर आकर्षित करानेवाले दोही कवि है - बच्चन और काका हाथरसी।" [३] साथ ही काकाजी के व्यक्तित्व के बारे में "कमल" जी लिखते है - "काका लोकप्रिय कवि ही नहीं, मानवीय गुणों से विभूषित बडे सहृदय और सहज व्यक्ति हैं। उनका व्यक्तित्व उनकी कविता से भी अधिक प्रभावशाली लगता है। हिंदी की हास्य-व्यंग्य-कविता को मंच पर स्थापित करने का श्रेय सचमुच काका को है।" [४]

---

१. संपादक डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ" (पृष्ठ १९)।
२. - वही - (पृष्ठ ८०)।
३. - वही - (पृष्ठ ३४)।
४. - वही - (पृष्ठ ३५)।

काकाजी के व्यक्तित्व के बारे में अमरेंद्रप्रसाद अग्रवाल जी ने भी लिखा है - "काका का व्यक्तित्व निराला है। उनका निरालापन भी बेहद निराला है। यही बवजह है कि, उन्हें हास्य-सम्राट कहने में किसी को कोई संकोच नहीं होता है।" [१]

काकाजी की उदारता का फायदा लोग कैसे उठाते हैं इसके बारे में श्री त्रिलोक गोयल जी कहते है - "एक पारिवारिक चर्चा में भाई बालकवि बेरागी कह रहे थे कि, काका इतने उदारमना है कि, कभी-कभी तो लोग उनकी भलमनसाहत का नाजायज लाभ उठा लेते है - किसी का भी दर्दभरा पत्र आता है कि, उसकी कन्या का विवाह है या वे रुग्ण हैं और आर्थिक संकट में हैं तो काका तत्काल उसे कुछ न कुछ सहायता भेज ही देते हैं। कुछ लोगों ने इस प्रकार के जाली पत्र लिखकर उनसे ठगी भी की हैं।" [२]

काकाजी के व्यक्तित्व का एक गुण है उनकी इंसानियत ! उनके इस गुण को पहचाननेवाले श्री गोपालदास 'नीरज' जी लिखते हैं - "काकाजी आयु में मुझसे काफी बडे हैं। इस नाते उनका सहज दुलार और प्यार मुझे सदैव ही मिलता रहा है। वे जिससे मिलते हैं, दिल खोलकर मिलते हैं। दुराव और छिपाव न उनकी कविता में है, न उनके व्यक्तित्व में। लगता है जैसे दोनों एक हैं। हिन्दी साहित्य में उनका हास्य बेजोड है। किसी भी मनहूस घडी को प्रफुल्लित कर देने की कला में वे पारंगत हैं। कवि तो वे हैं ही, परंतु उसके साथ-साथ वे एक इंसान भी हैं। सचमुच के इंसान। शायद कवि से भी बडे इंसान। इस युग में जब कवि तो रोज-रोज पैदा होते जा रहे हैं लेकिन इंसान मरते जा रहे हैं, तब काका का अस्तित्व हिन्दी मंच के लिए एक वरदान ही है।" [३]

काकाजी के व्यक्तित्व का एक पहलू हमारे सामने खोलते हुए श्री अमरेंद्रप्रसाद अग्रवाल जी ने लिखा है - "काका का व्यक्तित्व

---

१. अमरेंद्रप्रसाद अग्रवाल - "काका हाथरसी : व्यक्तित्व और साहित्य (पृष्ठ ३१)।

२. संपादक डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ (पृष्ठ २६)।

३. - वही - (पृष्ठ १४)।

परोपकारमय है। दूसरे के दुःखों पर मर-मिटना उनकी आदत-सी बन गयी है। यथासंभव वे सहयोग में संलग्न हो जाते हैं। इसी तरह नये-नये कवियों को भी उचित मार्गदर्शन के साथ-साथ प्रेरित करते रहते हैं। उनका छोटा-सा सहज और निश्छल आशीर्वाद भी व्यक्ति को महानता की पराकाष्ठापर पहूँचने का अवलम्ब बन जाता है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण उनके जीवन में भरे पड़े हैं। उनकी एक अन्य बड़ी विशेषता यह है कि, वे अपने को स्वयं तक सीमित नहीं रखते, वरन् अपने व्यक्तित्व को सबमें बिखेर देते हैं। कहना चाहिए कि, बिखेर ही नहीं देते, बल्कि उसमें गहरे उतरते जाते है।" [१]

काकाजी के व्यक्तित्व के सभी गुणों को समेटकर श्री कुंजबिहारी पांडेय लिखते है - "देश के सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में मैं काकाजी से सम्पर्कित रहा हूँ। उदार, गर्वरहित, सौम्य, शिष्ट, सरल, निष्कपट, मिलनसार, और हाजिरजवाब, अपने विषय के कवियों की उन्नति में ही प्रसन्न होनेवाले के दर्शन-मात्र से हृदय प्रफुल्लित हो उठता है।" [२]

काकाजी के हाजिरजवाबी के बारे में डा॰ मिथिलेश माहेश्वरी ने लिखा है - "हाजिर जवाबी में उन्हें आधुनिक युग का बीरबल कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनकी सुक्ष्म बुध्दि दूसरे के मुख से निकलती बात की तह तक पहुँच जाती है और वे उसको हास्य की चाशनी में लपेट कर प्रस्तुत करते है।" [३]

काकाजी का जीवन संघर्षों से भरा पड़ा है। उन्हें अपने जीवन के आरम्भिक काल में कई दुःखों का सामना करना पड़ा है। फिर भी वे कभी डगमगाये नहीं। उनकी भतीजी श्रीमती मीना अग्रवाल जी लिखती है - "मैंने काका को केवल एक बार रोते हुए देखा है। अगस्त, १९७५ में उनकी अम्मा यानी हमारी दादी का स्वर्गवास हुआ तो काका 'अम्मा-अम्मा'

१· अमरेंद्रप्रसाद अग्रवाल - "काका हाथरसी : व्यक्तित्व और साहित्य" (पृष्ठ ३०)।

२· संपादक डा॰ गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ" (पृष्ठ ६)।

३· डा॰ मिथिलेश माहेश्वरी - "काका हाथरसी - एक समीक्षा यात्रा" (पृष्ठ २६)।

कहकर फूट-फूटकर बच्चों की तरह रोने लगे। उनको रोता हुआ देखकर सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये कि, सदैव हँसने - हँसानेवाला व्यक्ति भी कभी रो भी सकता है। उस दिन एक शायर की ये पंक्तियाँ मेरे मुँह से बेसाख्ता निकल गई -

"कह कहों के लिए तुम तो मशहूर थे
देखते - देखते गमजदा हो गये।" [१]

इस प्रकार मानवीय गुणों से विभूषित काका हाथरसी एक कर्मठ व्यक्ति है। सदैव दूसरों को अपनी कविताओं के द्वारा हँसानेवाले काकाजी स्वभावतः गंभीर एवं संयत है। जीवन के कठोर संघर्षों में तपकर भी जीवन की सुंदरता को खुद पहचानकर दूसरों को दिखानेवाले काकाजी ने हास्य-व्यंग्य को ही जीवन को पार करने की सीढ़ी मान लिया है। खुद हँसकर दूसरों को हँसानेवाली उनकी रचनाएँ कौन-सी है, यह अब हम देखेंगे।

२. कृतित्व :

वैसे तो काकाजी ने बचपन से ही काव्यरचना करना आरंभ कर दिया था। लेकिन १९३३ के आस-पास इलाहाबाद के "गुलदस्ता" साप्ताहिक पत्र के मुखपृष्ठपर उनकी एक 'गजल' उनके मूल नाम प्रभूलाल गर्ग "काका" के नाम से प्रकाशित हो गयी। यही उनकी प्रथम प्रकाशित रचना है। "संगीत" मासिक पत्रिका के प्रकाशन के बाद उनकी हास्यरस की सर्वप्रथम पुस्तक "काका की कचहरी" छपी। काका की आजतक लगभग ४४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं लेकिन उनमें से कई प्रारंभिक रचनाएँ आज अप्राप्य हैं जैसे - काका की कचहरी (१९४६), पिल्ला (१९५०), दुलत्ती (१९६१), काका के कहकहे (१९६६), महामूर्ख सम्मेलन (१९६६), चकल्लस (१९६८),

---

१. संपादक डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ" (पृष्ठ ६४)।

काकाकोला (१९६८), हँसगुल्ले (१९६८), काका के धड़ाके (१९६९), कहँ काका कविराय (१९७०), योगा एण्ड भोगा (१९८०) आदि।
काकाजी की प्राप्य रचनाओंको हम निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं -

हास्य - व्यंग्य रचनाएँ -

'म्याऊँ' - इसका प्रथम प्रकाशन सन् १९५४ में "संगीत कार्यालय", हाथरस द्वारा हो गया। इस संग्रह में काकाजी की ८३ कविताएँ संकलित की गयी है।

'काका के कारतूस - सन् १९६३ में प्रकाशित इस संग्रह में काकाजी की ६४ रचनाएँ संकलित हैं।

'काका की फुलझड़ियाँ - इसका प्रथम प्रकाशन सन् १९६५ में हो गया। इस संग्रह में काकाजी की १२० फुलझड़ियाँ संकलित हैं।

'जय बोलो बेईमान की - इसका प्रकाशन सन् १९७३ में "हिंद पॉकिट बुक्स" द्वारा हो गया। इसमें कुल ९१ कविताएँ हैं।

'पैरोडियाँ व कविताएँ' - सन् १९८२ में डा· गिरिराजशरण अग्रवालजी द्वारा संपादित इस संग्रह में काकाजी की ६६ कविताएँ, ४६ मिनी कविताएँ और ९७ फिल्मी पैरोडियों का संकलन हैं।

'काकदूत व अन्य कविताएँ - सन् १९८२ में डा· गिरिराजशरण अग्रवालजी के द्वारा संपादित इस संग्रह में कालीदास के "मेघदूत" के समान काकाजी की हास्य-व्यंग्य रचना "काकदूत" और अन्य १४७ कविताओं का संकलन हैं।

'काका की विशिष्ठ रचनाएँ' - सन् १९८६ में प्रकाशित डा॰गिरिराजशरण अग्रवालजी द्वारा संपादित इस संग्रह में काकाजी की ७४ रचनाओं को संकलित किया गया है।

'काका के व्यंग्यबाण' - सन् १९९२ में प्रकाशित इस संग्रह में काकाजी की अधिक उन रचनाओं संकलन हैं जिसमें व्यंग्य की मात्रा अधिक है, हास्य की कम ! इस संग्रह में कुल ८५ कविताएँ हैं।

'कक्के के छक्के' - इस संग्रह का प्रकाशन १९९३ में हुआ। इसमें काकाजी की ऐसी रचनाओं का संकलन है जिसमें केवल छह पंक्तियों में पूरी बात कही गयी है। इसमें कुल ३६४ छक्के संम्मिलित हैं।

'कूटनीति मंथन करी' - सन् १९९४ में प्रकाशित इस संग्रह में काकाजी द्वारा लिखित हास्य-व्यंग्य पूर्ण दोहों का संकलन किया गया है।

गद्य-पद्य संग्रह -

'काका काकी की नोंक-झोंक' - काकाजी कवि सम्मेलनों में काकीजी की निंदा करते है, ऐसा काकाजी ने सुना तो वे काकाजी से उलझ पड़ी। कुल पंद्रह बैठकों में काकाजी के द्वारा काका को पूछे सवाल और काका के द्वारा दिये गये हास्य-व्यंग्य पूर्ण जवाब इस पुस्तक में संग्रहित है। इसका प्रथम प्रकाशन अगस्त, १९८१ में हो गया था।

'काका की चौपाल' - सन् १९८२ में प्रकाशित इस पुस्तक में श्रोताओं द्वारा पूछे गये अटपटे सवाल और काकाजी द्वारा दिये गये चटपटे जवाबोंका संकलन है।

'काका की महफिल' - सन् १९८९ में इस पुस्तक का प्रकाशन हो गया। इसमें ९ महफिलों में काकाजी को पूछे गये सवाल, उनके द्वारा दिये गये हास्य-व्यंग्य पूर्ण जवाबों के साथ श्रोताओं के अनुरोधपर उनके द्वारा सुनाई गयी कविताओं का संकलन है।

'काका तरंग' - इसका प्रकाशन सन् १९९१ में हो गया। इसमें काकाजी को आये पाठकों के खतों में उन्हें पूछे गये सवालों के काकाजी के द्वारा दिये गये जवाब संकलित हैं।

'काका काकी के लव लैटर्स' - इसमें काकाजी ने अपनी शादी से पूर्व काकीजी को जो खत लिखे और काकीजी ने जो जवाब दिये उनका संकलन है। साथ ही इसमें काकाजी की ५१ कविताओं का संकलन है।

'काका का दरबार' - सन् १९९१ में प्रकाशित इस संग्रह में काकाजी की ४८ कविताओं के साथ सवाल-जवाब भी है।

'काका शतक' - सन् १९९२ में इसका प्रकाशन हो गया। इसमें महाराजा भर्तृहरि लिखित त्रिशतक के ३०० श्लोकों का काकाजी के अपने अंदाज में १०० छन्दों में सार प्रस्तुत किया है और साथ ही इसमें काकाजी को पूछे गये सवाल और उनके जवाब भी सम्मिलित है।

प्रहसन -

'काका के प्रहसन' - काकाजी ने बचपन में ही दो नाटक लिखे थे लेकिन वे प्रकाशित न हो सके। सन् १९९१ में काकाजी के १० प्रहसनोंका संग्रह प्रकाशित हो गया। इस संग्रह के प्रहसन इस प्रकार है - १ भंग की तरंग, २ चुनाव का टट्टू, ३ हमीर का हलवा, ४ मनसुखा लीला, ५ लल्लो को ब्याह, ६ फ्री स्टाईल गवाही, ७ माखन चोरी, ८ लाला इकारचन्द, ९ मनसुखा की ब्रजयात्रा, १० झूला को झटका।

अन्य कवियों की रचनाओं का संकलन एवं संपादन -

'काका की काकटेल' - मार्च,१९७३ में प्रकाशित इस संग्रह में काकाजी ने कुल ५३ कवियों की ५८ कविताऐं संकलित की है। इसमें स्वयं काका की तीन कविताऐं सम्मिलित है।

'चार सप्तक' - सन् १९८९ में प्रकाशित इस संग्रह में कुल १२ हास्य कवियों की रचनाऐं संकलित है। ये कवि हैं - अल्हड बीकानेरी, अशोक चक्रधर ओम प्रकाश आदित्य, काका हाथरसी, जैमिनी हरियाणवी, डा०बरसानेलाल चतुर्वेदी, माणिक वर्मा, शैल चतुर्वेदी, सुरेंद्र मोहन मिश्र, सुरेश उपाध्याय, सूंड फैजाबादी, हुल्लड मुरादाबादी।

'खिलखिलाहट' - सन् १९९३ में प्रकाशित काका हाथरसी द्वारा संपादित इस काव्यसंग्रह में स्वयं काका समेत ४९ कवियों की रचनाओं का संकलन है।

आत्मकथा –

'मेरा जीवन ए-वन' – सन १९९३ में काकाजी की आत्मकथा प्रकाशित हो गई। इसमें काकाजी ने सिर्फ जीवन की घटनाओं का वर्णन ही नहीं दिया है बल्कि कुछ कुछ कविताएँ भी दी है और साथ ही उस समय की रूढ़ी, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, प्रचलित प्रथाएँ आदि का चित्रण भी किया है।

अन्य साहित्य –

काकाजी ने सन् १९३० के आसपास जिस "संगीत" मासिक का प्रकाशन किया तब से उसकी रजत जयंती तक वे उसका लेखन कार्य भी करते रहे। साथ ही आज तक काकाजी ने तीन संगीत ग्रंथों की रचना की हैं। वे हैं –

'संगीत सागर।'

'संगीत विशारद' – इसके अबतक १९ संस्करण निकल चुके है। इसपर काकाजी ने अपना छद्म नाम "वसंत" लिख दिया था। उसे लिखा काकाजी ने था लेकिन उनके बेटे लक्ष्मीनारायण ने उसमें से गलतियों को सुधार था।

'राग कोश।'

इस प्रकार काकाजी ने यद्यपि गद्य रचनाएँ लिखी है, प्रहसन लिखे हैं, संगीत पर ग्रंथ भी लिखे हैं, तथापि हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में उन्हें जितना जाना जाता हैं उतना अन्य किसी रूप में जाना नहीं जाता।

आज १८ सितम्बर, १९९५। आज सुबह साढ़े आठ बजे यह समाचार रेडिओपर सुनाई दिया। मैंने इसी वर्ष उनके साहित्य पर लघुशोध प्रबन्ध लिखना शुरू किया। अब तो मेरे लघुशोध प्रबन्ध के टंकण का कार्य भी लगभग पूरा हो चुका है और अचानक मुझे यह समाचार सुनने को मिला। अब तो मेरे लघुशोध प्रबन्ध में सुधार करना संभव नहीं।

संस्मरण -

- बम्बई का एक मराठी सार्वदैनिक "महाराष्ट्र टाईम्स" में २० सितम्बर, को "काका हाथरसी" लेख में संपादक ने लिखा है - "आदर्श व्यंग्यकार की कसौटीपर काका हाथरसी पूरी तरह उतरते थे।" [१]

- बम्बई का एक हिन्दी दैनिक "जनसत्ता" में २४ सितम्बर को "चले गये काका हंसते हंसते" इस लेख में "अजदक" जी ने लिखा है - "और अब जब काका नहीं है, लगता है कि, हंसने का वह एक कारण चला गया और हंसना कुछ कठिन हो गया।" [२]

- कोल्हापुर के मराठी दैनिक "पुढारी" में २५ सितम्बर को प्रा॰ डांगे जी ने लिखा है - "अब ऐसा बिना डरे काव्य का लेखन कौन करेगा ?" [३]

१॰ दैनिक महाराष्ट्र टाईम्स, (बम्बई) (पृष्ठ ६)।

२॰ दैनिक जनसत्ता, (बम्बई) (पृष्ठ ४)।

३॰ दैनिक पुढारी, (कोल्हापुर) (पृष्ठ ४)।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, काकाजी के आरम्भिक जीवन की आर्थिक विपन्नता और संघर्ष पर कवि के रूप में काकाजी अट्टहास कर उठें। बर्फी देवी जैसी मिठी मैया के कोख से जन्म लेनेवाला वह बालक तो हँसी - खुशी के सिवा क्या दे सकता है ? शिक्षा का अभाव तो उनकी खुशी में बाधक नहीं बना और न ही उनके विकास में। अनुभवों के बलबूतेपर जो ज्ञान पाया उसी को उन्होंने अपनी प्रतिभा के बलपर काव्यरूप में ढालकर पाठकों के सम्मुख पेश किया। अनुभव तो घर बैठे प्राप्त नहीं होते। पहाडों की, तीर्थस्थलों की, विदेश की यात्राओं ने जीवन की ओर देखने की एक नई दृष्टि उन्हें प्रदान की। साहित्य, संगीत और चित्रकला इन तीनों कलाओं का त्रिवेणी संगम जिनके व्यक्तित्व में पाया जाता है, ऐसे काका हाथरसी जनमानस के हृदयपर ८९ वर्ष की आयु में भी राज कर रहे हैं।